2

अर्थव्यवस्था की मूलभूत समस्याएँ

2.1 भूमिका

पिछले पाठ में आपने अर्थव्यवस्था और उसकी प्रमुख आर्थिक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया। इन प्रमुख प्रक्रियाओं में से एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उत्पादन प्रक्रिया है। उत्पादन प्रक्रिया में उत्पादकों को बहुत-सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है जैसे क्या उत्पादित करें, कितनी मात्रा में उत्पादित करें, उत्पादन कैसे करें और किसके लिए करें आदि। इन समस्याओं का सामना प्रत्येक अर्थव्यवस्था में सभी उत्पादकों को करना पड़ता है। इस पाठ में आप इन समस्याओं के बारे में, ये क्यों उत्पन्न होती हैं, इन्हें अर्थव्यवस्था की मूलभूत या केन्द्रीय समस्याएं क्यों कहा जाता है आदि का अध्ययन करेंगे।

2.2 उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- 'संसाधनों की दुर्लभता' का अर्थ बता सकेंगे;
- 'संसाधनों के वैकल्पिक उपयोग' का अर्थ बता सकेंगे;
- 'संसाधनों की किफायत' का महत्त्व बता सकेंगे;
- आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न होने के कारण बता सकेंगे;
- अर्थव्यवस्था की मुख्य केन्द्रीय समस्याएँ बता सकेंगे;
- अर्थव्यवस्था में संसाधनों का विकास और उनके कुशलतम उपयोग की समस्या को बता सकेंगे;
- अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याओं को उत्पादन संभावना वक्र द्वारा स्पष्ट कर सकेंगे।

2.3 संसाधनों की दुर्लभता

असीमित आवश्यकताएँ

मानवीय आवश्यकताओं में समय के साथ-साथ वृद्धि होती है। यह वृद्धि ज्ञान में वृद्धि, परिवर्तन की इच्छा और बेहतर रहन-सहन की इच्छा आदि के कारण होती है। अतः यह कहा जाता है कि आवश्यकताएं असीमित होती हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को संतुष्ट करने का प्रयत्न करता है। क्या आप बता सकते हैं कि आवश्यकताओं की संतुष्टि कैसे होती है?

सीमित साधन

आप पिछले पाठ में पढ़ चुके हैं कि वस्तुओं और सेवाओं के उपभोग से आवश्यकताओं की संतुष्टि होती है। हम अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए वस्तुएं और सेवाएं बाजार से खरीदते हैं। हम कितनी मात्रा में वस्तुएं व सेवाएं खरीद सकते हैं? यह हमारी आय पर निर्भर करता है। हम अपनी आवश्यकता की सभी वस्तुएं व सेवाएं नहीं खरीद सकते क्योंकि हमारी आय सीमित होती है। अर्थात् सीमित आय के कारण सभी आवश्यकताओं को संतुष्ट नहीं किया जा सकता है। आय व्यक्ति के लिए वह संसाधन है जिससे वह अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि करता है। किसी भी व्यक्ति की आय असीमित नहीं हो सकती। इस प्रकार आय व्यक्ति के लिए एक दुर्लभ संसाधन है।

संसाधनों की दुर्लभता

आइए, अब अर्थव्यवस्था के संदर्भ में संसाधनों की दुर्लभता का अर्थ समझें। हम अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए जो वस्तुएं व सेवाएं खरीदते हैं वे अर्थव्यवस्था में उत्पादित होती हैं। इनका उत्पादन करने के लिए विभिन्न प्रकार के संसाधनों की आवश्यकता होती है जैसे मानवीय संसाधन, प्राकृतिक संसाधन और मनुष्य द्वारा निर्मित संसाधन अर्थात् पूंजी।

इन संसाधनों को भूमि, श्रम, पूँजी और उद्यम के रूप में भी वर्गीकृत किया जाता है। किसी भी अर्थव्यवस्था में ये संसाधन असीमित मात्रा में उपलब्ध नहीं होते हैं। ये संसाधन सीमित होते हैं और सीमित मात्रा में ही वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करते हैं। दूसरे शब्दों में, इन संसाधनों की पूर्ति इनकी माँग की तुलना में कम होती है। अर्थात् ये संसाधन दुर्लभ होते हैं। जब किसी संसाधन की मांग उसकी पूर्ति से अधिक हो तो उसे दुर्लभ संसाधन कहते हैं। अतः किसी भी अर्थव्यवस्था में संसाधनों की दुर्लभता होती है।

2.4 संसाधनों का वैकल्पिक उपयोग

जब किसी संसाधन का उपयोग विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए किया जा सकता है तो उसे संसाधन के वैकल्पिक उपयोग कहते हैं। जैसे आप अपनी आय से विभिन्न वस्तुएं व सेवाएं खरीद सकते हैं, उसी प्रकार संसाधनों का उपयोग विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए किया जा सकता है। जब किसी संसाधन का उपयोग किसी वस्तु या सेवा के उत्पादन के लिए किया जाता है तो वह किसी अन्य वस्तु या सेवा का उत्पादन करने के लिए उपलब्ध नहीं रहता। इससे संसाधनों के उपयोग में चयन की समस्या उत्पन्न होती है। उदाहरण के लिए, यदि भूमि के किसी टुकड़े पर गेंहू की फसल उगाई जाती है तो उसी समय कोई अन्य फसल उगाने के लिए वह टुकड़ा उपलब्ध नहीं रहता है। इसी

प्रकार, यदि आप अपना श्रम खेत पर काम करने में लगाते हैं तो उस समय आपके श्रम का उपयोग कारखाने में नहीं किया जा सकता है। संक्षेप में, अर्थव्यवस्था में संसाधन दुर्लभ होते हैं और उनके वैकल्पिक उपयोग होते हैं।

याद रखिए

- आवश्यकताएँ असीमित होती हैं और इनकी संतुष्टि के लिए असीमित मात्रा में वस्तुओं और सेवाओं की आवश्यकता होती है।
- वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करने वाले संसाधन दुर्लभ होते हैं अर्थात् इन संसाधनों की पूर्ति इनकी मांग की तुलना में कम होती है।
- दुर्लभ संसाधनों का वैकल्पिक उपयोग होता है। इससे चयन की समस्या उत्पन्न होती है।

पाठगत प्रश्न 2.1

कोष्ठक में दिए गए विकल्पों में से उपयुक्त शब्द चुनकर निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

(i) संसाधनों की .... उनकी पूर्ति की तुलना में अधिक होती है। (कीमत, माँग, उपयोगिता)

(ii) संसाधनों के वैकल्पिक उपयोग के कारण .... की समस्या उत्पन्न होती है। (मांग, पूर्ति, चयन)

(iii) आवश्यकताएं .... और .... के उपयोग से संतुष्ट होती है। (वस्तुओं, आय, पूर्ति, सेवाओं)

(iv) पूंजी .... संसाधन है। (प्राकृतिक, मानवीय, मनुष्यकृत)

2.5 आर्थिक समस्या

पिछले खण्ड में आपने पढ़ा कि अर्थव्यवस्था अपने सीमित संसाधनों से वस्तुओं और सेवाओं के विभिन्न समूहों का उत्पादन कर सकती है लेकिन संसाधनों की दुर्लभता के कारण उसको यह चयन करना होता है कि वह विभिन्न समूहों में से किस एक समूह का उत्पादन करे। इसे आर्थिक समस्या कहा जाता है।

वास्तव में, आर्थिक समस्या यानी चयन की समस्या का सामना उपभोक्ताओं और उत्पादकों दोनों को ही करना होता है। उपभोक्ताओं को विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं के उपयोग पर अपनी सीमित आय को आबंटित करने की समस्या का सामना करना पड़ता है।

उदाहरण के लिए, यदि किसी खेत पर गेहूं और गन्ना दोनों का उत्पादन किया जा सकता है तो इससे आर्थिक समस्या उत्पन्न होगी। किसान को यह चयन करना होगा कि खेत पर गेहूं की खेती की जाए या गन्ने की या किस अनुपात में दोनों की खेती की जाए। खेत एक दुर्लभ संसाधन है और इसके वैकल्पिक उपयोग हैं, इसलिए आर्थिक समस्या उत्पन्न हुई।

चयन की समस्या का संबंध उत्पादन की तकनीक से भी होता है। उदाहरण के लिए, किसी वस्तु का उत्पादन करने के लिए अधिक श्रम का उपयोग किया जाए या अधिक पूंजी का। श्रम तथा पूंजी को किस अनुपात में मिलाया जाए?

संसाधन दुर्लभ होते हैं। अतः प्रत्येक अर्थव्यवस्था इनका सर्वोत्तम उपयोग करने का प्रयत्न करती है। इसे संसाधनों की किफायत करना भी कहते हैं। दूसरे शब्दों में, संसाधनों की किफायत से तात्पर्य उनके अनुकूलतम उपयोग अर्थात् सर्वोत्तम संभव उपयोग से है।

याद रखिए

- संसाधनों की दुर्लभता और उनके वैकल्पिक उपयोगों के कारण चयन की समस्या यानी आर्थिक समस्या उत्पन्न होती है।
- संसाधनों के किफायत से तात्पर्य उनके अनुकूलतम या सर्वोत्तम उपयोग से है।

पाठगत प्रश्न 2.1

निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन सही और कौन-सा कथन गलत है?

(i) संसाधनों की किफायत से तात्पर्य उनकी कंजूसी से है।

(ii) आर्थिक समस्या संसाधनों की दुर्लभता और उनके वैकल्पिक उपयोगों के कारण उत्पन्न होती है।

(iii) आर्थिक समस्या का सामना केवल उत्पादकों को ही करना पड़ता है।

(iv) उपभोक्ता अपनी सभी आवश्यकताएं संतुष्ट कर सकते हैं।

2.6 अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएँ

केन्द्रीय समस्या का अर्थ

पिछले खण्ड में आपने पढ़ा कि उत्पादन के लिए सीमित संसाधन होते हैं और उनका वैकल्पिक उपयोग होता है। इससे चयन की समस्या यानी आर्थिक समस्या उत्पन्न होती है। इस समस्या का सामना प्रत्येक अर्थव्यवस्था को करना पड़ता है, चाहे वह अमीर या गरीब हो, बड़ी या छोटी हो, विकसित या अल्पविकसित हो, समाजवादी या पूंजीवादी हो या अन्य किसी भी प्रकार की हो।

केन्द्रीय समस्याएं

अर्थव्यवस्था में तीन मुख्य केन्द्रीय समस्याएं होती हैं :

(क) क्या उत्पादित करें और कितनी मात्रा में करें?

(ख) उत्पादन कैसे करें?

(ग) उत्पादन किसके लिए करें?

(क) क्या उत्पादित करें और कितनी मात्रा में करें ?

प्रत्येक अर्थव्यवस्था के पास वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए सीमित संसाधन होते हैं और उसके नागरिकों को असंख्य वस्तुओं और सेवाओं की आवश्यकता होती है। इन सीमित संसाधनों से अर्थव्यवस्था सभी वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन नहीं कर सकती है। उसके सामने यह समस्या आती है कि वह किन वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करें और कितनी मात्रा में करें। दूसरे शब्दों में, अर्थव्यवस्था को संसाधनों के आबंटन की समस्या का सामना करना पड़ता है। जैसे संसाधनों का उपयोग उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन के लिए किया जाए या उत्पादक वस्तुओं के उत्पादन के लिए। अर्थव्यवस्था को सीमित संसाधनों की वजह से यह निर्णय लेना पड़ता है कि वह बन्दूकें बनाएँ या असैनिक वस्तुएं, राजसी ठाठ वाले होटल बनाएं या रहने के लिए मकान, अधिक गेहूं उगाए या अधिक चावल या गन्ना।

वस्तुओं के उत्पादन का निर्णय लेने के बाद अर्थव्यवस्था को यह निर्णय लेना होता है कि वह उनकी कितनी मात्रा में उत्पादन करे। दूसरे शब्दों में, उपभोक्ता वस्तुओं व सेवाओं और उत्पादक वस्तुओं व सेवाओं के किस संयोग को उत्पादन के लिए चुना जाए। उत्पादित की जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं के संयोग की प्रकृति लोगों की प्राथमिकताओं पर निर्भर करती है। इन प्राथमिकताओं की झलक बाजार कीमतों में मिलती है या यह सरकारी नीतियों द्वारा निर्धारित प्राथमिकताओं पर निर्भर करती है। इस प्रकार क्या उत्पादित किया जाए और कितनी मात्रा में किया जाए यह संसाधनों के विभिन्न वैकल्पिक उपयोगों में आबंटित करने की समस्या है।

(ख) उत्पादन कैसे करें ?

इसका संबंध उत्पादन की तकनीक के चयन की समस्या से है। उत्पादन की तकनीक से तात्पर्य विभिन्न संसाधनों के उस अनुपात से है जिसमें उनका उपयोग वस्तु के उत्पादन के लिए किया जाता है। साधारणतया, वस्तुओं का उत्पादन कई तरीकों से किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, श्रम और पूंजी का विभिन्न अनुपातों में प्रयोग करके किसी वस्तु का उत्पादन किया जा सकता है। किसी वस्तु के उत्पादन में पूंजी की तुलना में अधिक श्रम का उपयोग किया जाता है तो उसे **श्रम गहन उत्पादन तकनीक** या प्रणाली कहते हैं। इसके विपरीत यदि किसी वस्तु के उत्पादन में श्रम की तुलना में अधिक पूंजी का उपयोग किया जाता है तो इसे **पूंजी गहन उत्पादन तकनीक** कहते हैं।

उदाहरण के लिए, कपड़े का उत्पादन पूंजी व श्रम का विभिन्न अनुपातों में उपयोग करके किया जा सकता है। जब हम बड़ी स्वचलित मशीनों से कपड़ा बनाते हैं तो इसमें कम श्रम की आवश्यकता होती है। उत्पादन की इस तकनीक को हम पूंजी गहन तकनीक कहते हैं। यदि हम स्वचलित मशीनों का प्रयोग

न करें और हाथ से कपड़ा बनाए तब हम अधिक श्रम और कम पूंजी का प्रयोग कर रहे हैं। कपड़ा बनाने का यह तकनीक श्रम गहन तकनीक है। इसी प्रकार यदि खेती करने के लिए ट्रैक्टर आदि मशीनों का प्रयोग किया जाता है तो यह उत्पादन की पूंजी गहन विधि है। लेकिन यदि लकड़ी के हल से खेती की जाती है तो यह उत्पादन की श्रम गहन विधि है।

उत्पादन की तकनीक के चयन की यह समस्या इसलिए उत्पन्न होती है क्योंकि श्रम और पूंजी दोनों सीमित मात्रा में उपलब्ध होते हैं। अर्थव्यवस्था को सीमित संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग करना होता है इसलिए उसे विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन के लिए उत्पादन की विभिन्न तकनीकों में से चयन करना होता है। अतः यह समस्या भी संसाधनों की दुर्लभता के कारण उत्पन्न होती है।

(ग) किसके लिए उत्पादन करें?

अर्थव्यवस्था में किसी भी व्यक्ति को वह सब कुछ प्राप्त नहीं हो सकता जिसकी उसे आवश्यकता होती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि अर्थव्यवस्था में जो कुछ भी उत्पादित किया जाता है वह प्रत्येक की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं होता है। दूसरे शब्दों में, यह समस्या विभिन्न समूहों में उत्पादन के वितरण की समस्या है।

अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन, उत्पादन के चारों साधनों (श्रम, भूमि, पूंजी, उद्यम) के स्वामियों के संयुक्त प्रयत्नों के परिणामस्वरूप होता है। अतः कुल उत्पादन को इन उत्पादन साधनों के स्वामियों में बाँटना होता है। उत्पादन के साधनों को उत्पादन सेवाओं के बदले में लगान, मजदूरी, ब्याज और लाभ के रूप में आय प्राप्त होती है। इस आय से वे वस्तुएं और सेवाएं खरीदते हैं। इनमें से प्रत्येक कितनी वस्तुएं व सेवाएं खरीद सकता है, यह प्रत्येक की आय पर निर्भर करता है। अतः यह समस्या अर्थव्यवस्था में आय के वितरण की समस्या है। यह समस्या संसाधनों की दुर्लभता से उत्पन्न होती है। यदि संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते तो सभी वस्तुओं और सेवाओं का भी प्रचुर मात्रा में उत्पादन होता और वितरण की कोई समस्या भी उत्पन्न नहीं होती।

इस प्रकार संसाधनों की दुर्लभता के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याओं को अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएं कहा जाता है। सभी अर्थव्यवस्थाओं की कुछ अन्य सामान्य समस्याएं भी है। आप अगले खण्ड में इनका अध्ययन करेंगे।

याद रखिए

- अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएं संसाधनों की दुर्लभता और इनके वैकल्पिक उपयोगों के कारण उत्पन्न होती है।
- अर्थव्यवस्था में क्या उत्पादित करें और कितनी मात्रा करें, कैसे करें और किसके लिए करें समस्या का संबंध संसाधनों के आबंटन से है।

पाठगत प्रश्न 2.3

निम्नलिखित कथनों में से सही उत्तर पर सही का चिन्ह (✓) लगाइए :

(i) अर्थव्यवस्था में क्या उत्पादित करें, यह समस्या उत्पन्न होती है-
(अ) राजनैतिक मतभेद के कारण
(ब) आय की असमानता के कारण
(स) बेरोजगारी के कारण
(द) संसाधनों की दुर्लभता के कारण

(ii) संसाधनों के आबंटन की समस्या का सम्बन्ध निम्नलिखित में से किससे है?
(अ) क्या उत्पादित करें?
(ब) कैसे उत्पादन करें?
(स) किसके लिए उत्पादन करें?
(द) उपरोक्त सभी से।

2.7 कुछ अन्य सामान्य समस्याएं

केन्द्रीय समस्याओं के अतिरिक्त प्रायः अर्थव्यवस्थाओं को कुछ निम्नलिखित आर्थिक समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है जैसे :

(क) संसाधनों का सम्पूर्ण उपयोग
(ख) संसाधनों का विकास

(क) संसाधनों का सम्पूर्ण उपयोग

सभी संसाधनों का सम्पूर्ण व सर्वाधिक कुशलतापूर्वक उपयोग करने की आवश्यकता होती है। इस प्रकार इस आर्थिक समस्या के दो पहलू हैं : (i) संसाधनों का सम्पूर्ण उपयोग और (ii) संसाधनों का सर्वाधिक कुशलतापूर्वक उपयोग।

(i) संसाधनों का सम्पूर्ण उपयोग

कोई भी संसाधन बेकार नहीं पड़ा रहना चाहिए। यदि संसाधन बेकार पड़े रहते हैं तो ये संसाधनों की बरबादी है। बेरोजगारी की समस्या उपलब्ध मानवीय संसाधनों का उपयोग न होने की समस्या है। यदि सभी संसाधनों का पूरा उपयोग होता है तो इनसे उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा भी अधिक होगी। इसलिए प्रत्येक अर्थव्यवस्था ऐसी योजनाएं और नीतियां बनाती है जिससे अर्थव्यवस्था का कोई संसाधन बेकार न पड़ा रहे।

(ii) संसाधनों का सर्वाधिक कुशलतापूर्वक उपयोग

संसाधनों का अल्प उपयोग नहीं होना चाहिए। अर्थात् संसाधनों का कुशलतम उपयोग होना चाहिए। जब संसाधनों के वैकल्पिक उपयोगों के बीच किसी भी पुनः आवंटन से अर्थव्यवस्था में कुल उत्पादन न बढ़े तब यह संसाधनों के कुशलतम उपयोग की स्थिति है। जब संसाधनों का कुशलतम उपयोग नहीं किया जाता तो यह उनके अल्प उपयोग की स्थिति है। इससे संसाधनों की बरबादी होती है। प्रत्येक अर्थव्यवस्था उत्पादन के लिए बेहतर तकनीक अपनाने का प्रयत्न करती है जिससे संसाधनों का बेहतर उपयोग हो सके।

(ख) संसाधनों में वृद्धि

सभी लोगों को उपयोग के लिए अधिक से अधिक वस्तुएं और सेवाएं चाहिए। लेकिन जब तक अधिकाधिक संसाधन उपलब्ध नहीं होगें तब तक अधिकाधिक उत्पादन नहीं किया जा सकता। अतः अर्थव्यवस्था के विकास के लिए अर्थात् अधिकाधिक वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा में वृद्धि के लिए संसाधनों में वृद्धि होना आवश्यक है। इस आर्थिक समस्या के दो पहलू हैं : (क) मात्रात्मक पहलू, और (ख) गुणात्मक पहलू।

अर्थव्यवस्था को संसाधनों की मात्रा में ही वृद्धि नहीं करनी होती बल्कि उनमें गुणात्मक सुधार भी लाना होता है। जैसे अर्थव्यवस्था को संसाधनों की मात्रा में वृद्धि के लिए अधिक प्राकृतिक संसाधनों का पता लगाना होता है, अधिक पूंजीगत वस्तुओं का उत्पादन करना होता है और इसके साथ-साथ संसाधनों की गुणवत्ता में सुधार के लिए अधिक कुशल श्रम उपलब्ध कराना, बेहतर पूंजीगत वस्तुएं बनाना शामिल होता है। इस प्रकार अतिरिक्त संसाधन जुटाना भी एक प्रमुख समस्या है जो कि सभी देशों में उत्पन्न होती है। प्रायः सभी विकसित देश अपने संसाधनों में वृद्धि करके ही अमीर बने हैं।

इस प्रकार आपने जाना कि प्रत्येक अर्थव्यवस्था को बहुत-सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अधिकांश समस्याएं संसाधनों की दुर्लभता के कारण उत्पन्न होती है। इन समस्याओं को रेखाचित्र के द्वारा भी समझाया जा सकता है। इसके बारे में आप अगले खण्ड 2.7 में पढ़ेंगें।

याद रखिए

- अर्थव्यवस्था में संसाधनों में वृद्धि से तात्पर्य उनमें मात्रात्मक और गुणात्मक सुधार से है।
- अर्थव्यवस्था में संसाधनों के वैकल्पिक उपयोगों के बीच किसी भी पुनः आबंटन से यदि कुल उत्पादन में वृद्धि नहीं होती तो यह संसाधनों के संपूर्ण व कुशलतम उपयोग की स्थिति है।

पाठगत प्रश्न 2.4

निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन सही और कौन-सा कथन गलत है?

(i) अर्थव्यवस्था में संसाधनों में वृद्धि से तात्पर्य संसाधनों के संपूर्ण व कुशलतम उपयोग से है।

(ii) संसाधनों में मात्रात्मक और गुणात्मक सुधार से अर्थव्यवस्था में संसाधनों में वृद्धि होती है।

(iii) विकास के लिए संसाधनों को जुटाना भी सभी देशों की प्रमुख समस्या है।

(iv) यदि अर्थव्यवस्था में संसाधनों के वैकल्पिक उपयोगों के बीच पुनः आबंटन से कुल उत्पादन में वृद्धि होती है तो यह संसाधनों के अपूर्ण व अकुशल उपयोग की स्थिति है।

2.8 उत्पादन संभावना वक्र

पिछले खंड में आपने अर्थव्यवस्था की मुख्य आर्थिक समस्याओं के बारे में पढ़ा। इन सभी समस्याओं को रेखाचित्र उत्पादन संभावना वक्र द्वारा दिखाया जा सकता है।

(i) संसाधनों के आबंटन की समस्या

सभी अर्थव्यवस्थाओं में सीमित संसाधन होते हैं। इन संसाधनों का विभिन्न वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादन के लिए प्रयोग किया जा सकता है। अर्थव्यवस्था को यह निर्णय लेना होता है कि विभिन्न वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादन संयोगों में से किसका चयन करें।

मान लीजिए, अर्थव्यवस्था अपने संसाधनों से सिर्फ दो वस्तुएं (कपड़ा और गेहूं) ही उत्पादित करने का निर्णय लेती है। आप यह भी मान लीजिए कि सभी संसाधनों का संपूर्ण व सर्वाधिक कुशलतापूर्वक उपयोग हो रहा है। इस स्थिति में अर्थव्यवस्था सारणी 2.1 में कपड़ा और गेहूं उत्पादन के लिए दिए गए 5 संभावित संयोगों का उत्पादन कर सकती है।

सारणी 2.1

उत्पादन संभावना तालिका

उत्पादन के संभावित संयोग	कपड़ा (करोड़ मीटर)	गेहूं (लाख क्विंटल)
A	0	10
B	1	9
C	2	7
D	3	4
E	4	0

उपरोक्त सारणी में A बिंदु यह दर्शाता है कि यदि अर्थव्यवस्था अपने सभी सीमित संसाधनों का प्रयोग गेहूं उत्पादन के लिए करती है तो वह 10 लाख क्विंटल गेहूं का उत्पादन कर सकती है। उत्पादन संभावना का B बिन्दु यह दर्शाता है कि अर्थव्यवस्था 9 लाख क्विंटल गेहूं और 1 करोड़ मीटर कपड़े का उत्पादन कर सकती है। इसी प्रकार बिंदु C,D और E गेहूं और कपड़े के विभिन्न उत्पादन संयोगों को दर्शाते हैं जिनका अर्थव्यवस्था उत्पादन कर सकती है। आइए, उत्पादन संभावना के इन विभिन्न बिन्दुओं से ग्राफ पेपर पर रेखाचित्र बनाए।

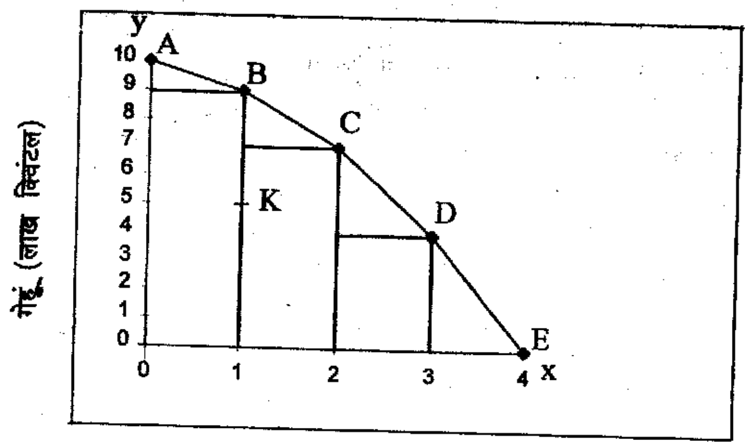

कपड़ा (करोड़ मीटर)

रेखाचित्र 2.1 उत्पादन संभावना वक्र

रेखाचित्र 2.1 में जो AE वक्र है वह उत्पादन संभावना वक्र कहलाता है। इसको देखने से यह पता चलता है कि जब उत्पादन संभावना वक्र पर बिन्दु A से बिन्दु E की तरफ जाते हैं तो अर्थव्यवस्था गेहूं उत्पादन में से संसाधनों को हटाकर कपड़े के उत्पादन में लगाती है। अर्थव्यवस्था को उत्पादन संभावना वक्र पर दिए गए किसी गेहूं और कपड़े के उत्पादन के विभिन्न संयोगों में से किसी एक बिंदु का चयन करना होता है। बिंदु A गेहूं और कपड़े के उत्पादन का पहला संयोग है जो 10 लाख क्विंटल गेहूं का उत्पादन कर सकता है। बिन्दु B उत्पादन का दूसरा संयोग है जो 1 करोड़ मीटर कपड़ा और 9 लाख क्विंटल गेहूं का उत्पादन कर सकता है। इसी प्रकार बिन्दु C, D और E उत्पादन के वैकल्पिक संभावित संयोगों के बिन्दुओं को दर्शाते हैं जिनका उत्पादन अर्थव्यवस्था दिए गए सभी संसाधनों के संपूर्ण व कुशलतम उपयोग से कर सकती है।

(ii) संसाधनों का अपूर्ण या अकुशल उपयोग

यदि अर्थव्यवस्था रेखाचित्र 2.1 में दिए गए AE उत्पादन संभावना वक्र पर किसी भी बिंदु को गेहूं और

कपड़े के उत्पादन के लिए चयन करती है तो वह सभी संसाधनों का संपूर्ण व कुशलतापूर्वक उपयोग कर रही है। यदि अर्थव्यवस्था गेहूं और कपड़ा उत्पादन के विभिन्न संयोगों में से किसी ऐसे बिन्दु पर उत्पादन करती है जो AE वक्र के नीचे हो तो यह बिन्दु संसाधनों का अपूर्ण या अकुशल उपयोग को दिखाएगा। जैसे कि रेखाचित्र 2.1 में दिखाया गया K बिन्दु 5 लाख क्विंटल गेहूं और 1 करोड़ मीटर कपड़े के उत्पादन को दर्शाता है। जब इस बिन्दु पर उत्पादन स्तर को उत्पादन संभावना वक्र पर दिए गए बिन्दु C और D से तुलना करें तो बिन्दु C और D पर कपड़े और गेहूं का अधिक उत्पादन है। अतः उत्पादन संभावना वक्र के नीचे दिखाया गया कोई भी बिन्दु संसाधनों के अपूर्ण व अकुशल उपयोग के कारण कम उत्पादन स्तर को बताएगा और उत्पादन संभावना वक्र पर दिखाया गया कोई भी बिंदु संसाधनों के कुशल व संपूर्ण उपयोग के कारण अधिक उत्पादन स्तर को बताएगा।

(ग) संसाधनों में वृद्धि

आप पिछले खंड 27 में पढ़ चुके हैं कि सभी अर्थव्यवस्था संसाधनों में वृद्धि करना चाहती है। संसाधनों में वृद्धि के परिणामस्वरूप अधिक वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन होता है। आइए, एक उदाहरण द्वारा इसे समझें। सारणी 2.2 में संसाधनों में वृद्धि के परिणामस्वरूप कपड़े और गेहूं के उत्पादन के विभिन्न संयोगों को दिखाया गया है।

सारणी 2.2
उत्पादन संभावना तालिकाएं

उत्पादन संभावना के संयोग	दिए गए संसाधनों से उत्पादन		उत्पादन संभावना के संयोग	संसाधनों में वृद्धि के बाद उत्पादन	
	कपड़ा(करोड़ मीटर)	गेहूं (लाख क्विंटल)		कपड़ा(करोड़ मीटर)	गेहूं(लाख क्विंटल)
A	0	10	F	0	15
B	1	9	G	1	14
C	2	7	H	2	12
D	3	4	I	3	9
E	4	0	J	4	4
			K	5	0

उपरोक्त सारणी 2.2 संसाधनों में वृद्धि के परिणामस्वरूप उत्पादन के विभिन्न वैकल्पिक संयोगों को दिखाती है। इसे रेखाचित्र 2.2 द्वारा दिखाया गया है।

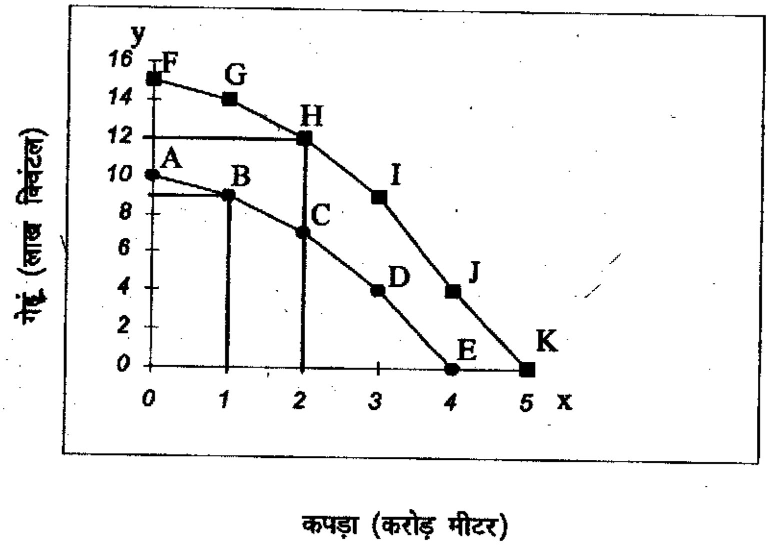

रेखाचित्र 2.2 : उत्पादन संभावना वक्र : संसाधनों में वृद्धि

उपरोक्त रेखाचित्र 2.2 में AE वही उत्पादन संभावना वक्र है जो रेखाचित्र 2.1 में दिखाया गया था। जब अर्थव्यवस्था में अधिक संसाधन उपलब्ध होते हैं तब वह अधिक मात्रा में गेहूं और कपड़े का उत्पादन कर सकती है। यह रेखाचित्र में FK उत्पादन संभावना वक्र द्वारा दिखाया गया है। AE वक्र पर दिखाया गया बिन्दु B और FK वक्र पर दिखाया गया बिंदु H की तुलना करने पर पता चलता है कि H बिन्दु पर अधिक मात्रा में गेहूं और कपड़े का उत्पादन है। बिन्दु B 1 करोड़ मीटर कपड़ा और 9 लाख क्विंटल गेंहू के उत्पादन संयोग को दिखाता है जबकि बिन्दु H 2 करोड़ मीटर कपड़ा और 12 लाख क्विंटल गेंहू के उत्पादन संयोग को दिखाता है। अतः संसाधनों में वृद्धि अर्थात् संसाधनों की उपलब्धता में वृद्धि से उत्पादन संभावना वक्र आगे की तरफ या दाहिने तरफ खिसकता है।

याद रखिए

- अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याओं को उत्पादन संभावना वक्र द्वारा दिखाया जा सकता है।
- उत्पादन संभावना वक्र पर दिखाया गया कोई भी बिंदु संसाधनों के संपूर्ण व कुशलतम उपयोग को दिखाता है।
- उत्पादन संभावना वक्र के नीचे दिखाया गया कोई भी बिन्दु संसाधनों के अपूर्ण व अकुशल उपयोग को दिखाता है।
- उत्पादन संभावना वक्र का दाहिने तरफ या आगे की तरफ खिसकना संसाधनों में वृद्धि को बताता है।

पाठगत प्रश्न 2.5

निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन सही और कौन-सा कथन गलत है?

(i) उत्पादन संभावना वक्र पर दिखाया गया कोई भी बिन्दु संसाधनों के कुशलतम उपयोग को दिखाता है।

(ii) उत्पादन संभावना वक्र के दाहिने तरफ कोई भी बिन्दु संसाधनों के अकुशल उपयोग को दिखाता है।

(iii) उत्पादन संभावना वक्र के नीचे का कोई भी बिन्दु संसाधनों में वृद्धि को दिखाता है।

(iv) उत्पादन संभावना वक्र अर्थव्यवस्था में संसाधनों के आंबटन की समस्या को बताता है।

आपने क्या सीखा

- सभी अर्थव्यवस्थाओं में सीमित संसाधन होते हैं और उनका वैकल्पिक उपयोग होता है।
- सभी अर्थव्यवस्थाएं संसाधनों को सर्वोत्तम संभव उपयोग में लगाने का प्रयत्न करती हैं। इस कारण उन्हें चयन की समस्या का सामना करना पड़ता है।
- चयन की समस्या से तात्पर्य किन वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करें, कितना उत्पादन करें, कैसे उत्पादन करें और किससे लिए उत्पादन करें आदि से है।
- सभी अर्थव्यवस्थाओं को चयन की समस्या के अतिरिक्त संसाधनों के संपूर्ण व कुशलतम उपयोग और संसाधनों में वृद्धि की समस्या का सामना करना पड़ता है।
- अर्थव्यवस्था की सभी केन्द्रीय समस्याओं को उत्पादन संभावना वक्र द्वारा दिखाया जा सकता है।

पाठांत प्रश्न

1. संसाधनों की दुर्लभता व इनके वैकल्पिक उपयोग से आप क्या समझते हैं?
2. आर्थिक समस्या कैसे उत्पन्न होती है? यदि संसाधन असीमित होते तो क्या कोई आर्थिक समस्या उत्पन्न होती ?
3. अर्थव्यवस्था की मुख्य केन्द्रीय समस्याएं उत्पादन संभावना वक्र द्वारा बताइए।
4. संसाधनों का संपूर्ण उपयोग और संसाधनों का विकास से आप क्या समझते हैं?

उत्तर

पाठगत प्रश्न 2.1

(i) मांग (ii) चयन (iii) वस्तुओं, सेवाओं (iv) मनुष्यकृत

पाठगत प्रश्न 2.2

(i) गलत (ii) सही (iii) गलत (iv) गलत

पाठगत प्रश्न 2.3

(i) (द) (ii) (द)

पाठगत प्रश्न 2.4

(i) गलत (ii) सही (iii) सही (iv) सही

पाठगत प्रश्न 2.5

(i) सही (ii) गलत (iii) गलत (iv) सही

पाठांत प्रश्न

1. पढ़िए अनुभाग 2.3 और 2.4
2. पढ़िए अनुभाग 2.5
3. पढ़िए अनुभाग 2.6 और 2.8
4. पढ़िए अनुभाग 2.7